और उन्हीं को बेकुंठ(१) होता है. और जिन का मन शुद्ध नहीं, तिन का दान, पूजा, तप, तीर्थ करना, शास्त्र सुन्ना सब वृथा है. और जो श्रद्धाहीन डिंभ समेत श्राद्ध करते हैं, तिन का निर्फल होता है; और पित्र उनके निरास जाते हैं. यह बात राजा ने सोच समझ कर बिचारी कि अब पिंडकर्म किया चाहिये. फिर राजा हरदत्त गया में गया; और जाकर अपने पित्रों के नाम ले फलगू(२) नदी के कनारे पिंड देने लगा, कि उस नदी में से तीनों के हाथ निकले. यह देख अपने जी में घबराया, कि मैं किस के हाथ में दूं; और किस के हाथ में न दूं.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बिक्रम! उन तीनों में से किसे पिंड देना उचित था? तब राजा ने कहा चोर को. फिर बैताल बोला किस कारन. तब कहा उस ने, कि ब्राह्मण का बीज तो मोल लिया गया. और राजा ने हज़ार अशरफ़ी ले के पाला. इसवास्ते उन दोनों को पिंड का अधिकार न हुआ. इतनी बात सुन, फिर बैताल उसी दरख़त पर जा टंगा और राजा उसे वहां से बांधकर ले चला.

उन्नीसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! चिचकूट नाम एक नगर है. तहां का रूपदत्त नाम राजा. एक दिन अकेला सवार

(१) वैकुण्ठ. (२) फल्गु.

हो शिकार को गया. सो भूला हुआ एक महाबन में जा निकला. वहां जाके देखता क्या है कि एक बड़ा सा तालाब है. उस में कंवल खिल रहे हैं; और भांति भांति के पंछी कलोल कर रहे हैं; तालाब के चारों ओर, वृक्षों की घनी घनी छांव में ठंढी ठंढी हवा सुगंधों के साथ आ रही है. यह भी धूप का तौसा हुआ था, घोड़े को एक दरख़त से बांध, ज़ीनपोश बिछाकर बैठ गया. घड़ी एक बीती थी, कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दर जोबनवती वहां पुष्प लेने को आई. उसे फूल तोड़ते हुए देख, राजा अति काम के बस हुआ. जब वह फूल चुंट अपने स्थान को चली, तब राजा बोला कि यह तुम्हारा कैसा आचार है, कि हम तुम्हारे आश्रम में अतिथ आये; और तुम हमारी सेवा न करो.

यह सुनके वह फिर खड़ी हुई. तब राजा ने कहा कि ऐसे कहते हैं, कि उत्तम बरन के घर जो नीच बरन भी अतिथ आवे, तो वह भी पूजनीय है. और चोर हो, या चंडाल शत्रु हो, या पितघातक; पर जो वह भी अपने घर आवे, तो उस की भी पूजा करनी उचित है. क्यौं कि अतिथ सब का गुरू है. इस तरह से जब राजा ने कहा तब वह खड़ी हुई. फिर तो दोनों आंखें लड़ाने लगे. इस में वह मुनि भी आ पहुंचा. राजा ने उस तपसी को देख नमस्कार किया. और उन्ने आशीरबाद दिया कि चिरंजीव रहो.

इतना कह उस ने राजा से पूछा कि यहां किस कारन

आये हो? उस ने कहा महाराज! शिकार करने आया हूं. वह बोला कि किस लिये तू महापाप करता है? ऐसा कहा है कि एक जन पाप करता है, और अनेक जन उस के पाप का फल भुगतते हैं. राजा ने कहा कि महाराज! मुझ पर कृपा करके धर्म अधर्म का बिचार कहो. तब वह मुनि बोला सुनिये महाराज! कि जो जीव तृन जल खा बनबास करते हैं, तिन के मारने से बड़ा अधर्म होता है. और पशु, पंछी, मनुष के प्रतिपाल करने का बड़ा धर्म है. और ऐसा कहा है, कि जो भयमान और सरन आये को निर्भय कर देते हैं, सो महादान का फल लेते हैं. और ऐसा कहा है कि छमा बराबर तप नहीं; और संतोष समान सुख; मिचता तुल्य धन नहीं; और दया सम धर्म. और जो नर अपने धर्म में सावधान हैं, और धन, गुण, बिद्या, यश, प्रभुता पा अभिमान नहीं करते; और जो अपनी स्त्री से संतुष्ट हैं, और सत्यबादी हैं, सो अंतकाल मुक्ति गति पाते हैं. और जो जटाधारी वस्त्रहीन निरायुध को हनते हैं, वे लोग अंत समैं नरक भोग करते हैं. और जो राजा रएयत के दुखदाइयों को नहीं दंड देता, वह भी नरक भुगतता है. और जो राजपत्नी, या मित्र की स्त्री या कन्या, या आठ नो महीने की गर्भनी से भोग करते हैं, सो महानरक में पड़ते हैं; ऐसा धर्म शास्त्र में कहा है.

यह सुन राजा ने कहा आज तक नादानी से जो पाप किया सो किया. फिर भगवान ने चाहा तो मैं न करूंगा.

राजा के इस कहने से मुनि ने प्रसन्न होके कहा कि जो तू बर मांगे, सो दूं. मैं तुझ से बहुत संतुष्ट हुआ. तब राजा ने कहा कि महाराज! जो तुम मुझ पर तुष्ट हुए, तो अपनी कन्या मुझे दो. यह सुन मुनि ने अपनी पुत्री राजा को गंधर्व बिवाह की रीत से ब्याह दी. और आप अपने स्थान को गया. फिर राजा ऋषिकन्या को ले अपने नगर की तरफ़ चला; रस्ते में क़रीब आधो दूर के सूरज अस्त हुआ; और चंद्रमा उदै. तब राजा, एक दरख़्त घना सा देख, उस के नीचे उतर, घोड़ा उस की जड़ से बांध, ज़ीनपोश बिछा, उस समेत सो रहा. फिर दो पहर रात के समैं, एक ब्रह्मराक्षस ने आ, राजा को जगाकर कहा कि हे राजा! मैं तेरी स्त्री को खाऊंगा. राजा ने कहा ऐसा मत कर; जो तू मांगेगा सो मैं दूंगा. तब राक्षस ने कहा कि ऐ राजा! जो तू सात बरस के ब्राह्मण के लड़के का सिर काटकर अपने हाथ से मुझे दे, तो मैं इसे न खाऊं. राजा ने कहा ऐसेही मैं करूंगा. पर आज के सातवें दिन तू मेरे नगर में आइयो; मैं तुझे दूंगा.

इसी तरह से, राजा को बचन बंद कर, राक्षस अपने स्थान को गया. और भोर हुए. राजा भी अपने महल में आ दाख़िल हुआ. मंत्री ने सुनकें बहुत सी शादी की, और आके भेंट दी. और राजा ने, मंत्री से वह वृत्तांत कहकर, पूछा कि सातवें दिन राक्षस आवेगा. कहो उस का यत्न क्या करें. मंत्री ने कहा महाराज! आप किसी बात की चिन्ता न कीजे. भगवान सब भला करेगा.

इतना कह, मंची ने, सवा मन कंचन का एक पुतला बनवा, उस में जवाहिर जड़वा, एक छकड़े पर रखवा, चौराहे में खड़ा करवाकर, उस के रखवालों से कहा कि जो कोई इस के देखने को आवे यही उससे कहो, कि जो ब्राह्मण अपने सात बरस के लड़के का राजा को सिर काटने दे, सो इसे ले. यह कहकर चला आया. फिर लोग जो उस के देखने को आते थे उस से चौकीदार यही कहते थे.

दो दिन तो योंहीं बीते. पर तीसरे दिन, उसी नगर का एक दुर्बल सा ब्राह्मण, कि जिस के तीन बेटे थे, वह यह बात सुन घर में आ, ब्राह्मणी से कहने लगा कि एक पुत्र अपना राजा को बलि के वास्ते दे, तो सवा मन सोने का पुतला जड़ाऊ घर में आवे. यह सुन ब्राह्मणी बोली कि छोटे लड़के को न दूंगी. ब्राह्मण ने कहा बड़े को मैं न दूंगा. यह बात सुन, मझले ने कहा कि पिता! मेरे तईं दीजे. उस ने कहा अच्छा. फिर ब्राह्मण बोला कि संसार में धनही मूल है. और धनहीन को सुख कहां. और जो दरिद्री हुआ उस का संसार में आना वृथा है.

इतना कह, मझले लड़के को ले जा, चौकीदारों को दे, उस पुतले को अपने घर ले आया. और इधर उस लड़के को लोग मंची के पास ले आये. फिर जब सात दिन बीत गये, वह राक्षस भी आया. राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, पान, वस्त्र ले उस की पूजा की; और उस लड़के को बुला, खड्ग हाथ में ले बलि देने को खड़ा हुआ. इस में वह लड़का, पहले हंसा, पीछे रोया.

इतने में राजा ने खड्ग मारा, कि सिर जुदा हो गया. सच है, जो ज्ञानी कह गये हैं; स्त्री संसार में दुख की खान है, और बिनती का घर, साहस को गिरानेवाली, और मोह को करनेवाली, धर्म को हरनेवाली. ऐसी जो विष की जड़ हो, उसे उत्तम किसने कहा है. और ऐसा कहा है कि आपदा के लिये धन रखिये; और धन देके स्त्री की रक्षा कीजे; और धन स्त्री देके अपने जी को बचाइये.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि हे राजा! मरने के समें आदमी रोता है; तू इस की हक़ीक़त बता, कि वह हंसा क्यों? राजा ने कहा, यह बिचारके वह हंसा कि बालकपन में माता रक्षा करती है; और बड़े हुए से, पिता पालता है; समें असमें रएयत की राजा सहाय करता है. संसार की यह रीत है. और मेरा यह हाल है कि माता पिता ने धन के लोभ से राजा को दिया; और यह खड्ग लिये मारने को खड़ा है; और देवता को बल की इच्छा है. दया किसी को भी न आई. यह सुन, बैताल उसी पेड़ पर जा लटका. और राजा भी वोंहीं झपटके पहुंचा; और उसे बांध, कांधे पर रख, ले चला.

बीसवीं कहानी।

बैताल बोला कि ऐ राजा! विशालपुर नाम एक नगर है. वहां के राजा का नाम विपुलेश्वर. उस के नगर में एक बनिया था. तिस का नाम अर्थदत्त. और उस की बेटी का